चांपावतो (राठौड़) के इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*भगवान सिंह शेखावत

शोध सारांश :–

मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास में मारवाड़ का इतिहास विशिष्ट है जहाँ के शासकों ने तात्कालिक राजनीति के साथ–साथ सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मारवाड़ रियासत में राठौड़ो का शासन रहा है। राठौड़ मारवाड़ में 13वीं शताब्दी के मध्य में आये थे। मारवाड़ में स्थायी शासन स्थापित होने के पश्चात् राठौड़ो की विभिन्न शाखाओं यथा– मेड़तिया, उदावत, जैतावत, चांपावत, कूंपावत, करमसोत, पातावत, करणोत, रूपावत, शोभावत, नरावत आदि का राजनीति व प्रशासन में योगदान रहा इनमें चांपावतों का योगदान उल्लेखनीय है। चांपावतों में राव चांपा, भैरवदास, जैसा, मांडण, गोपालदास, बल्लू, दलपत आदि उल्लेखनीय योद्धा हुये हैं।

संकेताक्षर :– मारवाड़, राठौड़, ठिकाना, जागीर, बादशाह, मेवाड़, उत्तराधिकार।

भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता पूर्व की रियासतों में मारवाड़ का प्रमुख स्थान था जिसके संस्थापक राठौड़ राजपूत थे। राठौड़ मारवाड़ के मूल निवासी नहीं थे अपितु ये दक्षिण भारत से राजपूताना आये थे। प्रारंभिक वर्षो में राठौड़ो के मूल पुरूष राव सीहा था जिसने कन्नौज से मारवाड़ में प्रवेश किया। गौरीशंकर हीराचंद ओझा की मान्यता है की राष्ट्रकूट शब्द का प्राकृत "रठ्ठउड़" होता है जिससे राठौड़ बना है।[1] प्रारंभिक राठौड़ो को नवीन प्रदेश मारवाड़ में अपना प्रभुत्व स्थापित करने में काफी संघर्ष करना पड़ा जिसमें राव सीहा के पश्चात् राव आस्थान्, धूहड़, जोपसा, उहड़, सिंधल, धाधंल, रायपाल, कान्हा, जालणसी, छाड़ा, टीडा आदि ने अपना योगदान दिया।

राठौड़ो के मूल पुरूष राव सीहा से राव जोधा तक राजनीतिक इतिहास उतार–चढ़ाव वाला रहा, परन्तु राव जोधा व इसके उत्तराधिकारियों द्वारा राजनीतिक–प्रशासनिक सैन्य दृष्टि से मजबूत विशाल रियासत की स्थपना की गई। राव जोधा ने सर्वप्रथम मारवाड़ का शासनतंत्र सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिये व अपने भू–भाग की रक्षा के लिए अपने भाईयों व पुत्रों में जागीर वितरित की जिससे कालान्तर में राठौड़ो की विभिन्न शाखाऐं बनी यथा–चांपावत, जैतावत, रूपावत, शोभावत, नरावत, करमसोत, कूंपावत आदि जिनमें चांपावतों का मारवाड़ के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

राव रणमल ने पाली के सोनगरा लोला की पुत्री से विवाह किया इसी सोनगरी रानी से चांपाजी का जन्म हुआ।[2] जोधपुर राज्य के संस्थापक राव जोधा ने भाई बंट में चांपा को जोधपुर के नजदीक कापरड़ा व बनाड़ दिया।[3] चांपावतों की ख्यात जो बहुत बाद में लिखी हुई गई उसमें कापरड़ा गाँव बसाने का श्रेय चांपाजी को दिया है। इस ख्यात में लिखा है ऊँटों की एक कतार सिंध से दिल्ली की ओर जा रही थी उस समय चांपाजी ने अपने पिता की आज्ञा प्राप्त कर उस कतार पर हमला किया। ऊँटों पर गुल के काये लदे हुये थे। चांपाजी ने अच्छा शगुन जानकर वही कापरड़ा गाँव बसाया। जोधपुर राज्य की ओर से प्रदान किये गए एक ताम्र पत्र (वि.सं. 1516) में चांपाजी का उल्लेख हुआ है।[4]

"आखरज चांपो करमसी सको भांया री साख।

राव समप्यो रीत सुं उपपै तिंका तलाक।।"

उदयभाण चांपावत री ख्यात में वीर चांपा के क्रमशः 3 पुत्रों का उल्लेख मिलता है जिनके नाम है – भैरवदास, पंचायन, सकता।[5] चांपावत राठौड़ो के इतिहास के अन्य प्रामाणिक स्त्रोत मोहन सिंह कानोता कृत चांपावतों का इतिहास में चांपा के 8 पुत्रों का वर्णन मिलता है।[6]

मारवाड़ रियासत में निम्नलिखित ठिकाने चांपावतों के रहे–

चाऊ, बरनेल, अड़वड़, खाटू बड़ी, आऊवा, दूदोड़, धामली, बाता, भंवालिया, बिठोड़ा कली, सांड़िया, आहोर, बाकरा, बुड़तरा, भैंसवाड़ा, मालगढ़, हरजी, खीवाड़ा, खुडाली, जानीयानां, दासपां, दीवाणदी, रोहट, लाम्बिया, रणसी गाँव ,समाड़िया, हरियाढाणा, हरसोलाव, बायसीन, पीलवा।

चांपाजी की छतरी, कापरड़ा

राव चांपा के पुत्रों में भैरवदास का विशिष्ट नाम है। भैरवदास ने राव जोधा, राव सातल, राव सूजा के समय के प्रमुख युद्धों में वीरता का अद्भुत प्रदर्शन किया। राव गाँगा के समय लड़े जाने वाले सेवकी के युद्ध में भैरवदास चांपावत काम आये। उदयभाण चांपावत री ख्यात में भैरवदास के पुत्रों का वर्णन मिलता है। भैरवदास का ज्येष्ठ पुत्र राम मेड़ता के युद्ध में काम आया था, भैरवदास के वंशजों को देवरी, मोदरा, लूट्टर आदि जागीर मिली। भैरवदास के पुत्र जैसा, मालदेव की सेवा में रहा। जब मेवाड़ में बनवीर ने षडयंत्र से मेवाड़ की गद्दी हथिया ली और पन्नाधाय के अतुलनीय बलिदान के कारण उदयसिंह की जान बच पायी। तब मारवाड़ से एक सैन्यबल उदयसिंह को उनका हक दिलाने मेवाड़ पहुँचा उसमें जैसा चांपावत ने बनवीर को परास्त कर उदयसिंह को मेवाड़ की सत्ता सौंपने में मुख्य भुमिका निभाई। महाराणा उदयसिंह ने जैसा चांपावत को प्रसन्न होकर जावर और आमेर का पट्टा दिया। शेरशाही सूरी के आक्रमण के समय जेसा चांपावत राव मालदेव के अंगरक्षक के रूप में रहा और जोधपुर दुर्ग की रक्षा का भार बखूबी संभाला। जैसा चांपावत के पास राणा द्वारा प्रदत्त मेवाड़ के ठिकानों की जागीर (जावर व

आमेर) के साथ आऊवा (मारवाड़) की जागीर भी रही। जैसा चांपावत के पश्चात् जैतमाल आऊवा की गद्दी पर आसीन हुआ जो चन्द्रसेन की सेवा में रहा। राव चांपा के वंशजों मे गोपालदास भी उल्लेखनीय है जिसने जोधपुर राज्य में किलेदार का महत्त्वपूर्ण पद मिला तथा जोधपुर राज्य द्वारा रणसी गाँव का पट्टा मिला। जहाँगीर जब मुगल सम्राट बना तब गुजरात उपद्व दबाने महाराजा सूर सिंह को भेजा जहाँ गोपालदास ने अतुलनीय वीरता का प्रदर्शन किया और नर्मदा नदी के तट पर वीर गति को प्राप्त हुआ।[7] गोपालदास की मृत्यु पर रणसी गाँव में भटियाणी और हाड़ी ठकुरानी वि. सं. 1664 के दिन सती हुई जिनकी छतरी आज भी गाँव में बनी है। गोपालदास के 8 पुत्र थे– भोपत, हाथी सिंह, राधोदास, खेतसी, बल्लू, हरिदास, विट्ठलदास, दलपत।

मुगलकाल में जहाँगीर के समय जब खुर्रम बागी हो गया तो बादशाह ने जोधपुर महाराजा गज सिंह को शहजादे परवेज के साथ भेजा। हाजीपुर पटना में गंगा के किनारे खुर्रम और परवेज के मध्य युद्ध हुआ जिसमें भोपत चांपावत शहीद हुआ।

आगरा के किले में अमर सिंह राठौड़ के मारे जाने पर बदला लेते हुए वि. सं. 1701 में बल्लू चांपावत ने प्राणोत्सर्ग किया जिस पर उसके वंशजों को राजोद, सिणला, दूदाड़ा की जागीर मिली। बादशाह शाहजहाँ की शाही सेना और औरंगजेब के मध्य जब धरमत का युद्ध हुआ जिसमें शाही सेना की और से जसवन्त सिंह की तरफ से विट्ठलदास चांपावत लड़ते हुए काम आया, विटलदास के वंशजों को पोकरण, दासंपा, पीलवा, बागावास, बाकरा, दुदोड़, नोसर, सामूजो, सरेचां आदि ठिकाने मिले। दलपत चांपावत ने महाराजा गजसिंह और महाराजा जसवंत सिंह की सेवा में रहकर अनेक सैनिक अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई जिससे प्रसन्न होकर जोधपुर राज्य की ओर से उसे रोहट (पाली) की जागीर मिली। दलपत के वंशजों को कालान्तर में लूम्बिया, आहोर, काकांणी, खारड़ा, भीमालिया खेजड़ली बड़ी आदि जागीर मिली।

मारवाड़ रियासत में राव चांपा के वंशजों को उनकी वीरता से जो ठिकाने मिले उनका विश्लेषण करने से पता चलता है कि उन्हें ताजीमी ठिकाने (32) मिले जो मेड़तियों (58) के बाद सर्वाधिक थे जो इस बात को इंगित करता है कि मारवाड़ रियासत को मध्यकालीन भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान प्रदान करवाने में चांपावतों का उल्लेखनीय स्थान था।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, (जोधपुर)

संदर्भ सूची :–

1. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 1, पृष्ठ 86
2. जोधपुर कविराज संग्रह, ग्रंथांक 76
3. मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृष्ठ 38
4. रेऊ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, पृष्ठ 95
5. उदयभाण चांपावत री ख्यात, पृष्ठ 6
6. मोहन सिंह कानोता चांपावतों का इतिहास, भाग 1, पृष्ठ 42
7. ऐतिहासिक बातां, परम्परा, पृष्ठ 96